

संपादक की कलम से

गलत तरीकों पर सवाल उठाना जरूरी

रोजगर सृजन पर मोटी सरकार की चुप्पी पर उठते सवालसवाल के जबाब में कुतर्क मण्डलार का राजसभा की 15 सीटों के लिए हूँ चुनाव में भाजपा ने एक बार पर अपना वर्चर्स कायम कर लिया। हालांकि यह वर्चर्स किस तरह भाजपा ने हासिल किया है, वह एक गंभीर सवाल बन चुका है। गोरतलव है कि 15 सीटों में से उत्तरांध्रिया की आदि, दिनांक प्रदेश की एक और कार्यालय की एक सीट भाजपा के खाल में गई। जबकि कर्नाटक की एकी बीन सीटों का कांग्रेस और आप की बीनों दो सीटें सपा के पास गई हैं।

उत्तरांध्रिया और दिनांक प्रदेश दोनों के विधायिकों को किसी तरह मजबूर किया कि वे उसके उपर्योगी को बोट दें। यह मनवीरी बन यानी रिश्ते से उपर्योगी है, या किसी और किस के दबाव के कारण बनी है, इसका खुलासा कभी नहीं हो सकता। तर्किया भाजपा भी अब इस बात को जानती है कि लोगों उसकी जीत की तारीफ करेंगे, प्रकार इस बात को मास्टर स्ट्रेट बताएंगे कि विधायिकों को जिसी तरह मजबूर किया कि वे उसके बाहरी ही बीनों को भाजपा ने अपने पक्ष में बोट लगाने नहीं करेंगे कि राजनीति में बढ़ दुके इस गलत चलन को स्वीकृत बताया जा रहा है।

दिनांक प्रदेश में कांग्रेस की सरकार है, उसके पास स्पष्ट बहुमत है, फिर भी भाजपा नी गैरभाजपी विधायिकों से अपने पक्ष में बोट लगाने में कायमबाही हो गई। यह विश्वित ही कांग्रेस की कामगारी है कि वह अपने विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई। सुवर्णदिवर सिंह सुख्ख तो मुख्यमंत्री होने के नाते इस गलती के लिए जिम्मेदार हैं ही, कांग्रेस के हिमाचल प्रदेश की भी इसमें विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई है। लेकिन कांग्रेस को जासूश ही की फूँफूँ कर पीता है, ऐसे मुहरोंपर पर कांग्रेस को कोई बद्धी नहीं है। उसे खतरों के खिलाड़ी बनने में शायद ज्यादा मजा आता है, फिर वहाँ साथी की बीजी ही दांव पर रखने न लग जाए। मध्यप्रदेश कर्नाटक, दिवार जैसे राज्यों में कांग्रेस ने भाजपा के अपरेशन लोट्स के कारण सत्ता गवाल, जारीब भूमि भी ऐसा होने का खतरा था, जो दूर गया। कांग्रेस बहाती तो अपने अनुभवों से सबके लाए लकड़ी की थी कि अगर भाजपा ने हिमाचल प्रदेश में हजार 25 विधायिकों के होने के बावजूद कांग्रेस के राजसभा उपीदारी के साथ अपने अन्य मानीदारों के बावजूद कांग्रेस की आपरेशन लोट्स के जावाब में लोट्स के लिए जिम्मेदार है। यह विश्वित ही कांग्रेस की कामगारी है कि वह अपने विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई। सुवर्णदिवर सिंह सुख्ख तो मुख्यमंत्री होने के नाते इस गलती के लिए जिम्मेदार हैं ही, कांग्रेस के हिमाचल प्रदेश प्रदेश की भी इसमें विधायिकों से अपने पक्ष में बोट लगाने में कायमबाही हो गई। यह विश्वित ही कांग्रेस की कामगारी है कि वह अपने विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई है। लेकिन कांग्रेस को जासूश ही की फूँफूँ कर पीता है, ऐसे मुहरोंपर पर कांग्रेस को कोई बद्धी नहीं है। उसे खतरों के खिलाड़ी

बनने में शायद ज्यादा मजा आता है, फिर वहाँ साथी की बीजी ही दांव पर रखने न लग जाए।

मध्यप्रदेश कर्नाटक, दिवार जैसे राज्यों में कांग्रेस ने भाजपा के अपरेशन लोट्स के कारण

सत्ता गवाल, जारीब भूमि भी ऐसा होने का खतरा था, जो दूर गया। कांग्रेस बहाती तो अपने अनुभवों से सबके लाए लकड़ी की थी कि अगर भाजपा ने हिमाचल प्रदेश में हजार 25

विधायिकों के होने के बावजूद कांग्रेस के राजसभा उपीदारी के साथ अपने अन्य मानीदारों के बावजूद कांग्रेस की आपरेशन लोट्स के जावाब में लोट्स के लिए जिम्मेदार है। यह विश्वित ही कांग्रेस की कामगारी है कि वह अपने विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई। सुवर्णदिवर सिंह सुख्ख तो मुख्यमंत्री होने के नाते इस गलती के लिए जिम्मेदार हैं ही, कांग्रेस के हिमाचल प्रदेश प्रदेश की भी इसमें विधायिकों से अपने पक्ष में बोट लगाने में कायमबाही हो गई। यह विश्वित ही कांग्रेस की कामगारी है कि वह अपने विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई है। लेकिन कांग्रेस को जासूश ही की फूँफूँ कर पीता है, ऐसे मुहरोंपर पर कांग्रेस को कोई बद्धी नहीं है। उसे खतरों के खिलाड़ी

बनने में शायद ज्यादा मजा आता है, फिर वहाँ साथी की बीजी ही दांव पर रखने न लग जाए।

कांग्रेस आपातकाम और उसके तमाम वर्चर ने अपनी जीत की तारीफ करायी तो बुनाई तैयारियों को गंभीरता से लेना शुरू करेंगे। काश, उन्हें रह समझ आए कि इस दौर में भाजपा को केवल मुद्दों पर धैरकर और उसकी गंभीरता की ओर ध्यान दिलाकर सत्तायुद्ध नहीं किया जा सकता। भाजपा को सत्ता से तभी हाथाया जा सकता है, जब उसकी रणनीतियों को विफल किया जाए।

राजसभा में कांग्रेस की एक पक्षी की जासूश के हाथ में नहीं जाती।

कांग्रेस आपातकाम और उसके तमाम वर्चर ने अपनी जीत की अद्यता होते हुए भी लाताराही दरवारी। मुख्यमंत्री सुखदिवर सिंह सुख्ख तो नवनियत करेंगे कि अगर भाजपा को एकत्रून्ही रख पाई जाए तो विधायिकों के हाथों गुग्गा से चुनाव हो रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया को चुनाव जिताना चाहती है। हालांकि ऐसा कैसा नाम नहीं है क्योंकि विधायिकों के हाथों गुग्गा से चुनाव हो रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया को चुनाव जिताना चाहती है। हालांकि ऐसा कैसा नाम नहीं है क्योंकि विधायिकों के हाथों गुग्गा से चुनाव हो रहे ज्योतिरादित्य सिंधिया को चुनाव जिताना चाहती है।

आपातकाम और उसकी जीत की तारीफ करायी तो बुनाई तैयारियों को एकत्रून्ही रख पाई जाएगी। यह विश्वित ही कांग्रेस की कामगारी है कि वह अपने विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई है। लेकिन कांग्रेस को जासूश ही की फूँफूँ कर पीता है, ऐसे मुहरोंपर पर कांग्रेस को कोई बद्धी नहीं है। उसे खतरों के खिलाड़ी

बनने में शायद ज्यादा मजा आता है, फिर वहाँ साथी की बीजी ही दांव पर रखने न लग जाए।

मध्यप्रदेश कर्नाटक, दिवार जैसे राज्यों में कांग्रेस ने भाजपा के अपरेशन लोट्स के कारण

सत्ता गवाल, जारीब भूमि भी ऐसा होने का खतरा था, जो दूर गया। कांग्रेस बहाती तो अपने अनुभवों से सबके लाए लकड़ी की थी कि अगर भाजपा ने हिमाचल प्रदेश में हजार 25

विधायिकों के होने के बावजूद कांग्रेस के राजसभा उपीदारी के साथ अपने अन्य मानीदारों के बावजूद कांग्रेस की आपरेशन लोट्स के जावाब में लोट्स के लिए जिम्मेदार है। यह विश्वित ही कांग्रेस की कामगारी है कि वह अपने विधायिकों को एकत्रून्ही रख पाई है। लेकिन कांग्रेस को जासूश ही की फूँफूँ कर पीता है, ऐसे मुहरोंपर पर कांग्रेस को कोई बद्धी नहीं है। उसे खतरों के खिलाड़ी

बनने में शायद ज्यादा मजा आता है, फिर वहाँ साथी की बीजी ही दांव पर रखने न लग जाए।

अगर ऐसा है तो फिर वह इस बात की गारंटी के लिए देंगे कि उसके शासन में ध्राघार के लिए यह सुखनशक्ति रहेगी। क्या भाजपा का तथाकथित गमराजय इही दुरायोंकों के साथ कायम होगा।

चंडीगढ़ से लेकर हिमाचल प्रदेश तक भाजपा ने जो सत्ता हाथियों का खेल रखा है, उसे अपर जनतों की रखीकृति मिल जाती है। अब राजसभा में 197 और एडीए के 117 सांसद हो गए हैं और 240 सीटों की राजसभा में 121 के बहुमत के अंकड़ा अब भाजपा से खास दूर हो गया है। अब तीसी बार भी जासूश की तारीफ करायी जाएगी।

प्रदेश भाजपा के अद्यक्ष कायम होते हुए भाजपा के लिए यह सुखनशक्ति रहेगी। क्या भाजपा का तथाकथित गमराजय इही दुरायोंकों के साथ कायम होगा।

चंडीगढ़ से लेकर हिमाचल प्रदेश तक भाजपा ने जो सत्ता हाथियों का खेल रखा है, उसे अपर जनतों की रखीकृति मिल जाती है। अब राजसभा में 197 और एडीए के 117 सांसद हो गए हैं और 240 सीटों की राजसभा में 121 के बहुमत के अंकड़ा अब भाजपा से खास दूर हो गया है। अब तीसी बार भी जासूश की तारीफ करायी जाएगी।

अगर ऐसा है तो फिर वह इस बात की गारंटी के लिए देंगे कि उसके शासन में ध्राघार के लिए यह सुखनशक्ति रहेगी। क्या भाजपा का तथाकथित गमराजय इही दुरायोंकों के साथ कायम होगा।

चंडीगढ़ से लेकर हिमाचल प्रदेश तक भाजपा ने जो सत्ता हाथियों का खेल रखा है, उसे अपर जनतों की रखीकृति मिल जाती है। अब राजसभा में 197 और एडीए के 117 सांसद हो गए हैं और 240 सीटों की राजसभा में 121 के बहुमत के अंकड़ा अब भाजपा से खास दूर हो गया है। अब तीसी बार भी जासूश की तारीफ करायी जाएगी।

अगर ऐसा है तो फिर वह इस बात की गारंटी के लिए देंगे कि उसके शासन में ध्राघार के लिए यह सुखनशक्ति रहेगी। क्या भाजपा का तथाकथित गमराजय इही दुरायोंकों के साथ कायम होगा।

चंडीगढ़ से लेकर हिमाचल प्रदेश तक भाजपा ने जो सत्ता हाथियों का खेल रखा है, उसे अपर जनतों की रखीकृति मिल जाती है। अब राजसभा में 197 और एडीए के 117 सांसद हो गए हैं और 240 सीटों की राजसभा में 121 के बहुमत के अंकड़ा अब भाजपा से खास दूर हो गया है। अब तीसी बार भी जासूश की तारीफ करायी जाएगी।

अगर ऐसा है तो फिर वह

